EDUZONE: International Peer Reviewed/Refereed Multidisciplinary Journal (EIPRMJ), ISSN: 2319-5045
Volume 15, Issue 1, January-June, 2026, Available online at: www.eduzonejournal.com

तुगलक स्थापत्य कलारू दिल्ली सल्तनत के एक युग का स्थापत्य और तकनीकी विश्लेषण

मासूदा परवीन[1], प्रो. (डॉ.) यशवंत शौर्य[2]

[1]शोधार्थी, इतिहास विभाग, मौलाना आजाद विश्वविद्यालय, बुझावड़, जोधपुर (राज.)
[2]शोध पर्यवेक्षक, निर्देशक आचार्य एवं विभागाध्यक्ष (इतिहास विभाग),सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी संकाय मौलाना आजाद विश्वविद्यालय, बुझावड़, जोधपुर (राज.)

प्रस्तावना

दिल्ली सल्तनत के इतिहास में तुगलक वंश (1320-1414 ई.) का काल कला और वास्तुकला की दृष्टि से एक क्रांतिकारी मोड़ था। खिलजी वंश की अत्यधिक अलंकृत और भव्य शैली के विपरीत, तुगलक वास्तुकला ने सादगी, मजबूती और उपयोगिता को प्राथमिकता दी। गाजी मलिक ने 1320 ई. में गयासुद्दीन तुगलक के नाम से तुगलक वंश की स्थापना की। इस वंश ने लगभग एक शताब्दी तक शासन किया, जिसमें तीन प्रमुख शासक हुएरू गयासुद्दीन तुगलक (1320-1325 ई.) मोहम्मद बिन तुगलक (1325-1351 ई.) फिरोज शाह तुगलक (1351-1388 ई.)।

संकेताक्षरः- स्थापत्य, लाल बलुआ पत्थर, संगमरमर धूसर क्वार्टजाइट, चूना प्लास्टर सजावट अत्यधिक नक्काशी, स्मारक, ज्यामितीय आकृति, कला और वास्तुकला, मीनार, मेहराब, गुंबद

स्थापत्य को प्रभावित करने वाले कारक - तुगलक वास्तुकला के स्वरूप को मुख्य रूप से तीन कारकों ने निर्धारित कियारू-

आर्थिक संकटरू मोहम्मद बिन तुगलक की योजनाओं की विफलता के कारण शाही खजाना खाली हो चुका था। इसलिए, महंगे संगमरमर के स्थान पर सस्ते स्थानीय पत्थरों का उपयोग किया गया।

मंगोल आक्रमण का भयरू वास्तुकला में सुरक्षा को सर्वोपरि रखा गया, जिससे किलेबंदी और विशाल दीवारों का निर्माण हुआ।

धार्मिक दृष्टिकोण- फिरोज शाह तुगलक के रूढ़िवादी इस्लामी विचारों के कारण इमारतों में अत्यधिक मानवीय या पशु आकृतियों के अलंकरण से परहेज किया गया।

तुगलक स्थापत्य की मुख्य विशेषताएं- तुगलक वास्तुकला की सबसे अनूठी विशेषता इसकी झुकी हुई या ढलवां दीवारें हैं। दीवारों का आधार चैड़ा और शीर्ष संकरा होता था। यह तकनीक मिस्र की वास्तुकला से प्रभावित मानी जाती है। इससे इमारतों को अत्यधिक मजबूती और भूकंपरोधी क्षमता मिलती थी। फिरोज शाह तुगलक की मस्जिदों में यह ढलान नहीं दिखाई देता है।

लाल बलुआ पत्थर के स्थान पर धूसर पत्थर खिलजी काल के लाल बलुआ पत्थर के विपरीत, तुगलक काल में दिल्ली के आसपास मिलने वाले कड़े धूसर रंग के क्वार्टजाइट पत्थरों का उपयोग किया गया। चूंकि यह पत्थर बहुत कठोर था, इसलिए इस पर महीन नक्काशी करना कठिन था, जिसने इमारतों को एक सादा और कठोर रूप दिया।

पत्थरों की खुरदरी सतह को छिपाने के लिए दीवारों पर चूने के गारे और जिप्सम प्लास्टर की मोटी परत चढ़ाई जाती थी। कई मामलों में इन पर सफेदी या रंग भी किया जाता था।

तुगलक वास्तुकारों ने हिंदू और इस्लामी शैलियों का सुंदर मिश्रण किया। उन्होंने द्वारक के निर्माण में मेहराब के साथ-साथ पारंपरिक भारतीय शाहतीर बीम का एक साथ उपयोग किया। इसे मेहराब-लिंटेल शैली कहा जाता है।

गयासुद्दीन तुगलक का काल (1320-1325) -
तुगलकाबाद का किला - गयासुद्दीन तुगलक ने दिल्ली में सल्तनत के चैथे शहर तुगलकाबाद की स्थापना की। यह किला एक ऊंची पहाड़ी पर बनाया गया था। इसकी दीवारें अत्यधिक विशाल और सुदृढ़ थीं। बुर्ज किले की दीवारों में अर्धवृत्ताकार विशाल बुर्ज बनाए गए थे, जिनमें तीरंदाजों के लिए छेद थे। भूमिगत मार्ग किले के भीतर गुप्त भूमिगत रास्ते और अनाज भंडारण के लिए गोदाम बनाए गए थे।

गयासुद्दीन तुगलक का मकबरा-यह मकबरा तुगलकाबाद किले के बाहर एक कृत्रिम झील के बीच में स्थित है, जो एक पुल द्वारा किले से जुड़ा है। यह एक वर्गाकार इमारत है जो मिस्र के पिरामिडों की तरह ऊपर की ओर झुकी हुई है। इसमें लाल बलुआ पत्थर का

उपयोग किया गया है और इसके गुंबद को सफेद संगमरमर से निर्मित किया गया है। यह मकबरा एक किले की तरह अभेद्य दिखाई देता है, जो शासक की सैन्य मानसिकता को दर्शाता है।

मोहम्मद बिन तुगलक का काल (1325-1351) -
जहांपनाह नगरमोहम्मद बिन तुगलक ने दिल्ली के पुराने शहरों (किला राय पिथौरा और सीरी) के बीच के क्षेत्र को सुरक्षित करने के लिए जहांपनाह (विश्व का शरणस्थल) नामक पांचवें शहर का निर्माण कराया। वर्तमान में इसके केवल अवशेष ही बचे हैं।

आदिलाबाद का किलातुगलकाबाद के दक्षिण में मोहम्मद बिन तुगलक ने अपने लिए एक छोटा किला बनवाया जिसे आदिलाबाद का किला कहा जाता है। इसकी स्थापत्य शैली पूरी तरह से तुगलकाबाद के समान ही थी।

सथपुला जहांपनाह के भीतर जल संचयन और सिंचाई के लिए एक अनोखे बांध का निर्माण किया गया, जिसे सथपुला (सात पुलों का पुल) कहा जाता है। इसमें पानी के बहाव को नियंत्रित करने के लिए सात मेहराबदार द्वार थे। यह सल्तनत काल के उत्कृष्ट जल-इंजीनियरिंग का उदाहरण है।

बारहखंबा जहांपनाह के भीतर स्थित विजय मंडल को मोहम्मद बिन तुगलक का महल माना जाता है। इसमें बारहखंबा नामक एक बहु-स्तंभीय हॉल था, जहां से सुल्तान जनता को संबोधित करता था।

फिरोज शाह तुगलक का काल (1351-1388) -

स्थापत्य का स्वर्णकाल फिरोज शाह तुगलक को दिल्ली सल्तनत का इंजीनियर सम्राट या महान निर्माता कहा जाता है। उसने अपने शासनकाल में सैकड़ों मस्जिदों, महलों, नहरों और सराय का निर्माण कराया।

फिरोजशाह कोटला (फिरोजाबाद)उसने दिल्ली के छठे शहर फिरोजाबाद की स्थापना की, जिसे आज फिरोजशाह कोटला के नाम से जाना जाता है। यह यमुना नदी के तट पर स्थित एक विशाल महल-परिसर था।

फिरोज शाह ने अंबाला (टोपरा) और मेरठ से सम्राट अशोक के दो शिलालेख स्तंभों को लाकर दिल्ली में स्थापित किया। एक स्तंभ को उसने अपने कोटला महल की छत पर त्रि-स्तरीय पिरामिड संरचना पर स्थापित करवाया।

हौज खास परिसर - अलाउद्दीन खिलजी द्वारा बनवाए गए हौज-ए-आलाई (झील) की फिरोज शाह ने मरम्मत करवाई और उसके किनारे एक विशाल मदरसा और अपना स्वयं का मकबरा बनवाया। यह परिसर मध्यकालीन शिक्षा का एक प्रमुख केंद्र था।

खिरकी मस्जिद- यह एक अनोखी बंद मस्जिद है। पूरी मस्जिद को छतों और छोटे गुंबदों से ढका गया है, और रोशनी के लिए दीवारों में पत्थर की सुंदर खिरकियां (जालियां) लगाई गई हैं।

बेगमपुरी मस्जिद - इस मस्जिद में एक बहुत बड़ा खुला प्रांगण है और इसका मुख्य प्रवेश द्वार अत्यंत विशाल मेहराब से सुसज्जित है। तकनीकी नवाचार और वास्तुकला का विश्लेषण - स्थापत्य तत्व खिलजी काल (पूर्ववर्ती) तुगलक काल मुख्य सामग्री लाल बलुआ पत्थर, संगमरमर धूसर क्वार्टजाइट, चूना प्लास्टर सजावट अत्यधिक नक्काशी, ज्यामितीय आकृति या सादगी, न्यूनतम अलंकरण दीवारें सीधी और पतली ढलवां (झुकी हुई) और अत्यधिक मोटी दृष्टिकोण सौंदर्य और भव्यता उपयोगिता, सुरक्षा और किफायत

अष्टकोणीय मकबरे का उदय फिरोज शाह के प्रधानमंत्री खान-ए-जहाँ तेलंगानी के मकबरे के साथ दिल्ली में पहली बार अष्टकोणीय मकबरे की शुरुआत हुई। यह वास्तुकला में एक बड़ा प्रयोग था, जिसे बाद में लोदी और सूरी वंश के शासकों ने पूर्णता प्रदान की।

तुगलक काल केवल महलों तक सीमित नहीं था। इस काल में सराय, कुएं, अस्पताल और सार्वजनिक स्नानागारों का बड़े पैमाने पर निर्माण किया गया, जो दर्शाते हैं कि स्थापत्य का उद्देश्य नागरिक सुविधाएं प्रदान करना भी था।

निष्कर्ष

तुगलक स्थापत्य कला इतिहास में एक विशिष्ट स्थान रखती है। यद्यपि आलोचक इसकी सादगी को कठोर और नीरस कहते हैं, परंतु सूक्ष्म विश्लेषण से पता चलता है कि यह तत्कालीन राजनीतिक अस्थिरता और आर्थिक सीमाओं का एक समझदारी भरा समाधान था। तुगलक वास्तुकारों ने भारी पत्थरों के उपयोग, झुकी हुई दीवारों और मेहराब-लिंटेल के संयोजन से मजबूत और टिकाऊ संरचनाएं बनाईं। फिरोज शाह तुगलक द्वारा शुरू की गई अष्टकोणीय मकबरा शैली और बहु-गुंबदी मस्जिद वास्तुकला ने आने वाले समय में लोदी, सूरी और प्रारंभिक मुगल वास्तुकला का आधार तैयार किया। संक्षेप में, तुगलक स्थापत्य भव्यता पर उपयोगिता की विजय का प्रतीक है।

संदर्भ ग्रंथ

1. ब्राउन, पर्सी (1942)रू इंडियन आर्किटेक्चर (इस्लामिक पीरियड), तारापोरवाला सन्स, मुंबई।
2. फर्ग्यूसन, जेम्स (1910)रू हिस्ट्री ऑफ इंडियन एंड ईस्टर्न आर्किटेक्चर, जॉन मरे, लंदन।
3. हबीब, मोहम्मद और निजामी, के.ए. (1970) द दिल्ली सुल्तानत (ए.डी. 1206-1526), पीपल्स पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
4. नाथ, आर. (1978)रू हिस्ट्री ऑफ सुल्तानत आर्किटेक्चर, अभिनव पब्लिकेशंस, नई दिल्ली।
5. सिंह, उपिंदर (2008)रू ए हिस्ट्री ऑफ एंशिएंट एंड अर्ली मेडिवल इंडिया, पियर्सन एजुकेशन, नई दिल्ली।